''हरिवंश राय बच्चन के काव्य में मानवीय संवेदना के विभिन्न रूप''

'डॉ॰ ज्योत्स्ना

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

किशन लाल पब्लिक कॉलेज,

रेवाड़ी (हरियाणा)।

सम्पूर्ण सृष्टि का केन्द्र मानव है। समस्त प्राकृतिक एवं मानव निर्मित संसाधन मानव के सुखोपयोग के लिए नियोजित किये जाते हैं। सामाजिक क्रांतियों का लक्ष्य भी मानव का विकास ही है। मानव का सुचारु जीवन–यावन समाज पर और समाज का संगठन प्रेम पर टिका हुआ है। मानव की समस्त गतिविधियों की प्रेरिका प्रेम–भावना है और यही भावना सौंदर्य दृष्टि का निर्माण करती है। जब यह भावना मानव मात्र तक आत्म–प्रसाद की भावना से अभिव्यक्ति के माध्यम से पहुँचाई जाए तभी हृदय का वास्तविक विकास संभव है और पृथ्वी पर मानव को यह भाव कवि ही दे सकता है।

बच्चन की सौंदर्यानुभूति मूलतः उनके भावों से स्पंदित है, उसमें महज सौंदर्य चित्रण को लक्ष्य करके सायास साज–संवार या मनमोहक नक्काशी नहीं है। उनकी आंख दिल में डुबकी लगाकर सौंदर्य दर्शन करती है। इसीलिए उनके मधुकाव्य में मस्ती का सौंदर्य है, निशा–निमंत्रण आदि में वेदना का सौंदर्य है, उल्लास एवं प्रणय काव्य में राग के बहुरंग रूपों का सौंदर्य है लोकधुनी गीतों में लोक जीवन का सौंदर्य है। उनकी सौंदर्यानुभूति ने प्रत्यक्ष अनुभूति से सीधा संबंध, रखने वाले सारे प्राकृतिक और भातिक उपकरणों को उनके सहज साधारण यथार्थ रूप में साग्रह स्वीकार किया है। तभी वे धूलि, सुरभि, मधु, रस, हिमकण के उस वातावरण में भी तकिया, ककड़ी के खेत, मिट्टी के घरोंदे, श्वान, काक, सुराही, प्याला और कंकड़–पत्थर आदि का निस्संकोच प्रयोग कर सके।''[1]

बच्चन की संतुलित, समन्वित सौंदर्यानुभूति के व्यापक कैनवास में हाला की मधुमय छलक है तो हलाहल का तिकत उफान भी, बहार की हरीतिया भी है,'' [2] पतझर का पालीपन भी, हंसते–खिलते डैफोडिल हैं तो बसंती फूलों में गिनती के पत्तों का उदास अमलतास तथा निरीह यौन कैक्टस भी –

''बहती है मधुवन में अ बपतझर की बयार

जिनकी छाया में काट दिये थे दिन दुख के

जिनकी छाया में देखे थे सपने सुख के

अब इने गिनेन पत्तों के हैं दिवस चार

तीखे स्वर में तूर बजा फिर,

कब्रों पर से अपने से ही,

हटी शिलाएँ,

कफन पहनकर एक एक से मुर्दे निकले,

कितने निकले? कौन बताए।''[3]

बच्चन मानव शरीर के सौंदर्य का चित्रण करने में सिद्धस्त हैं। नारी सौंदर्य के बहुरंग रूपों के साथ उन्होंने पुरुष सौंदर्य का भी चित्रांकन किया है। बच्चन अपने काव्य में ही नहीं वैयक्तिक जीवन में भी मानवता को सर्वोपरि महत्त्व देते हैं। उनके हर किसी के पत्र का तुरंत उत्तर देने के पीछे यही भावना काम करती है कि ''जीवित–जाग्रत मनुष्य से विचार भावों के आदान–प्रदान से अधिक आवश्यक क्या हो सकता है? कविता लिखना? जी नहीं! कविता तो इसलिए लिखी जाती है कि मनुष्य मनुष्य के निकट आ सके।''[4] वह यह देखकर क्षुब्ध हैं कि आदिम युग से संघर्षशील इंसान को ''आदम की आदमी कहलाती औलादों से अपने को बचाने को संघर्ष करना पड़ा है।''[5] उन्होंने मानव के समक्ष यही आदर्श रखा है –

जैसी हमने पाई दुनियाँ,

आओ उससे बेहत्तर छोड़ें,

शुचि सुंदरतर इसे बनाने से

मुँह अपना कभी न मोड़ें।''[6]

बच्चन जी की 'मधुशाला' में नारी सौंदर्य का एक चटकीला चित्र वास्तव में आकर्षक है –

''मेहंदी रंजित मृदुल हथेली में माणिक मद का प्याला,

अंगूरी अबगुंठन डाले स्वर्ण वर्ण साकीबाला

पाग बैंजनी, जामा नीला, डाट डटे पीने वाले,

इन्द्रधनुष से होड़ रही ले आज रंगीली मधुशाला।।''[7]

नारी किशोरावस्था से ही बच्चन के जीवन की अंग आवश्यकता–अनिवार्यता बन चुकी थी। नारी के भाव और अभाव से बच्चन के जीवन दर्शन की ही नहीं, उनके काव्य की भी दिशाएं निश्चित की है। उनके अनुसार प्रत्येक मानव नर–नारी का सम्मिश्रण होता है। किसी में नर अनुपाततः अधिक होता है, तो किसी में नारी। मानवीय सौंदर्य के अन्तर्गत मुख्यतः पुरुष और स्त्री के शारीरिक सौंदर्य का चित्रण साहित्य की परम्परा है। इस प्रकार पुरुष–सौंदर्य का भी काव्य में महत्त्व है लेकिन उसका चित्रण अपेक्षाकृत कम ही होता है। स्त्रियों की तरह पुरुषों के बाह्य रूप सौंदर्य का उतना महत्त्व नहीं, जितना कि उनके कर्म सौंदर्य (लोक कल्याण के लिए पुरुषार्थ पूर्ण कार्य) या शील सौंदर्य का।

अपने काव्य में पुरुष–सौंदर्य के अन्तर्गत उन्होंने कर्म एवं शील सौन्दर्य का वर्णन किया है। इस कवि के काव्य की लोकप्रियता का प्रमुख कारण उसमें पूर्ण ताजगी और स्पष्टता से व्यक्त मानव मन का, जीवन का अनुभूतिमूलक यौन सत्य है। हालावाद, में जीवन की अनेक विधि नीरसता, समस्या संकुलता और व्यथा के बावजूद जो थोड़ा सा रस है, उसे पूरी ताजगी और उमंग के साथ पी लेने की बात कही गयी है। सुख जब भी मिले उसे स्वीकारते चलो। इस जीवन–दर्शन से कष्टों का पथ भी तय किया जा सकेगा और जीवन उसकी सार्थकता में लिया जा सकेगा। जीवन की सार्थकता उसकी लम्बाई या लघुता में न होकर उसे किस चेतना के साथ जिया गया, द्रष्टव्य है –

''हाथों में आने से पहले, नाज दिखाएगा प्याला।

अधरों पर आने से पहले, अदा दिखाएगी हाला

बहुतेरे इन्कार करेगा, साकी आने से पहले,

पथिक, न घबरा जाना पहले, मान करेगी मधुशाला।''[8]

बंगाल के अकाल के समय के सामाजिक परिवेश का चित्रण करते हुए उस समय की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है –

भूखे देखे गए छीनकर,

बच्चों से निज रोटी खाते,

या कि बेचते उनको हाटों में,

कुछ तांबों के टुकड़ों पर,

जिससे दो दिन और जिये वे पशु का जीवन,

और फिर फिर घूरों पर।''[9]

तत्कलीन असह्या स्थिति को सहन करते हुए वे मानव को मानव कहलाने के अधिकार की भावना से प्रेरित करते हैं। कवि इस मानवीय विडम्बना, अत्याचार, शोषण के विरूद्ध भूखों के संगठित विद्रोह को, अपनी रोटी पाने के अधिकार को छीन लेने वाली कुछ क्रांति को स्थायी स्थायी और सही समाधान मानते हुए उन्हें यह आह्वान करता है –

अपनी रोटी, अपना राज,

इन्कलाब जिन्दाबाद।''[10]

प्रणय की अस्थिरता, आशाओं के पाश में बंधा विवश मानव, आशा–निराशा के इस चिंतन क्रम में ही सहसा ह्रास–रूदन दोनों से निलिप्त होकर कवि जग को विस्मय की दृष्टि से देखता है। हाला से मोह और हलाहल से भय मानव की भ्रांति है, दोनों जीवन के सत्य हैं, जो झूम–झूमकर पीते हैं, उन्हें हलाहल भी अगर मदिरा का स्वाद देता है और हलाहल को निर्भय होकर स्वीकारने पर वही मानव का अमरत्व सिद्ध कर देता है।

कवि के काव्य में युद्ध और रक्त का मानव की पाशविकता का, व्याकुल संसार का क्षोभमय वर्णन है। नीड़ बन गया तो उसका ध्यान अपने से बाहर देश की ओर गया और वह अपने शहीदों के बलिदानों से प्राप्त स्वतंत्रता के हर्षित हो चिल्ला उठा :–

''जो कि सेना साज आए चूर मद में हिन्द को करने फतह,

आज उनके नाम बाकी रह गई है कब्र भर की बस जगह,

किन्तु वह आजाद होकर शान से है विश्व के आगे खड़ा,

और होता जा रहा है शक्ति से सम्पन्न हर शामो–सुबह।।''[11]

बच्चन ने कविता को तपस्या की तरह जिया है। उनका मोह भंग स्वयं से नहीं, दुनिया की तरफ से हुआ है। इसीलिए कवि आत्मस्थ होकर काव्य लेखन से हाथ खींचकर मौन हो गया है। बच्चन की काव्य–चेतना सहज–सरल गति से विकसित हुई है। उन्होंने अपनी काव्य–प्रतिभा को एक धार में बहाने का प्रयत्न नहीं किया है। उसे जीवन–वैयक्तिक जीवन और युग जीवन दोनों की धारा के साथ स्वतः प्रवाहित

होने दिया है। मानवीय सौंदर्य के अन्तर्गत नारी रूप सौंदर्य का वर्णन ही सर्वप्रथम किया जाता है। बच्चन के काव्य में नारी–सौंदर्य का वर्णन सर्वाधिक उत्साह व मनोयोग के साथ किया गया है।

कवि नारी के सौंदर्य पान को मादकता भरा मानता है और उसके सौंदर्य रस को मधुशाला। जो व्यक्ति नारी के प्रति जितना जिज्ञासु होता है वह उतना ही रसिक और नारी उसके लिए रसमय बन जाती है। मस्ती के चरमोत्कर्ष से ही कहीं प्यास फूट पड़ती है। इसीलिए कवि नारी सौंदर्य का पान करने से अधिक पीने की अभिलाषा से उसकी कल्पना मात्र से ही मस्त रहना चाहता है –

''मदिरा पीने की अभिलाषा ही बन जाए जब हाला,

अधरों की आतुरता में ही जब भासित हो प्याला,

बने ध्या नही करते–करते, जब साकी साकार सखे,

रहे न हाला, प्याला, साकी, तुझे मिलेगी मधुशाला।''[12]

''मधुबाला'' में नारी सौंदर्य की मधुता छलक उठती है –

''उद्दाम तरंगों से अपनी,

मस्जिद, गिरजाघर, देवालय

मैं तोड़ गिरा दूंगी पल में,

मानव के बन्दीगृह, निश्चय।''[13]

'पगध्वनि' में कोमल तलवों और ऊँगलियों पर थिरकती छम छम भी साफ सुनाई पड़ती है –

''नंदन वन में उगने वाली,

मेहंदी जिन तलवों की लाली,

बनकर भू पर आयी आली

मैं उन तलवों से चिर परिचित,

मैं उन तलवों का चिर ज्ञानी,

वह पगध्वनि मेरी पहचानी।।''[14]

अपने प्रबल एवं मादक रागात्मक प्रवाह की उद्दमता से जड़ रूढ़ियों, बंधनों और मिथ्या मर्यादाओं की सारी सीमाएँ कवि ने तोड़ दी हैं। सहज जीवन जीना संभव न हो पाने पर धर्म, शिक्षा, आचार सभी में असहजता आ जाती है और मानव गुप्त रूप से मनचाहा जीवन आरंभ कर देता है। कवि में नारी के प्रति उल्लास भरा जीवन स्वर है–

''तारिका कलि से सुसज्जित,

नव दिशा के बाल चूमे,

वायु के रसमय अधर,

पहले सके छू होठ मेरे।।''[15]

जीवन संघर्ष से जूझते हुए जिस कवि ने मधुमय कल्पनाओं के रंग बिखेरे उस कवि की अभिन्न प्राणसंगिनी उसकी मासूम परछायी–सी को उसके देखते–देखते काल ने लील लिया। निराशा, औदास्य, अवसाद, एकाकीपन, विवशता ही इसमें कई रूपों में चित्रित है –

है पतझड़ की शाम सखे,

नीलम से पल्लव टूटे गए,

मरकत से साथी छूट गए,

अटके फिर भी दो पीत पात,

जीवन डाली को थाम सखे,

है यह पतझड़ की शाम सखे।।''[16]

इसमें व्याकुल संसार और मानवता के कल्याण के प्रति कवि की तड़प की अच्छी अभिव्यक्ति हुई है। उनकी मानसिक स्थिति अपने देश के क्षोभमय वातावरण की ओर गई। देशवासियों को बाधाओं से संघर्ष करते रहने के लिए उत्प्रेरित करता है।

हरिवंश राय बच्चन जी ने मानवीय सौंदर्य के विविध रूपों को अपने काव्य में स्थान दिया है और कुछ रूप तो अनायास ही उनके काव्य में समाहित हो गये हैं। वैसे भी लोक–व्यवहार और कला, दोनों में ही मानवीय सौन्दर्य का अत्यधिक महत्त्व है। काव्य का सीधा सम्बन्ध मानव से है और मानव प्रधान काव्य में प्रभावशालिता के लिए मानवीय सौंदर्य का भी चित्रण किया जाता है। बच्चन जी ने अपनी काव्य रचनाओं में मानव के सौंदर्य से जुड़ी हुए रंगों को अपने कैनवस में स्थान दिया है।

संदर्भ :

1. नगेन्द्र, आस्था के चरण, बच्चन की कविता, पृ. 218
2. बच्चन, कटती प्रमिभाओं की आवाज़, पृ. 77
3. बच्चन, बहुत दिन बीते कयामत का दिन, पृ. 31–32
4. बच्चन, निकट से, पृ. 191–192
5. बच्चन, जाल समेटा, संघर्ष क्रम, पृ. 31
6. बच्चन, सतरंगिनी, सातवां रंग, कर्त्तव्य, पृ. 40
7. बच्चन, मधुशाला, छंद, पृ. 12
8. बच्चन, मधुशाला, आत्म परिचय, पृ. 40
9. बच्चन, बंगाल का काल, पृ. 81
10. वही, पृ. 53,54
11. बच्चन, धार के इधर–उधर, पृ. 109
12. बच्चन, मधुशाला, पृ. 23–24

13. वही, गीत–8

14. बच्चन, पगध्वनि, पृ. 10

15. बच्चन, मधुशाला, कवि की वासना, पृ. 42

16. बच्चन, निशा निमंत्रण, गीत–8, पृ. 20